Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन: चिन्तन, चुनौतियाँ एवं समाधान

डॉ. राजेश कुमार मिश्रा
प्रभारी
संगणक एवं सूचना प्रौद्योगिकी अनुभाग उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान डाक घर आर. एफ. आर. सी., मंडला रोड
जबलपुर (म. प्र.), भारत

Article Info
Volume 5, Issue 3
Page Number : 21-24
Publication Issue :
May-June-2022
Article History
Accepted : 10 May 2022
Published : 24 May 2022

शोधपत्रसार: 'पर्यावरण' नवनिर्मित पारिभाषिक शब्द है, लेकिन इसके पूर्व, इसके व्यवहार हेतु यहां 'परिधि' और 'परिवेश' का प्रचलन रहा है। अथर्ववेद में 'परिधि' अधिक विस्तृत रूप में स्वीकृत है । गो, अश्व एवं पशु आदि सभी प्राणियों के जीवन के लिए एक परिधि अत्यावश्यक है । पर्यावरण व जलवायु का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है । इसके अन्तर्गत आने वाली विभिन्न घटकों से समस्त जीवन प्रभावित होती है । इसका सीधा सा अर्थ है कि जलवायु के परिवर्तन से पूरा विश्व और इसके अन्तर्गत आने वाली समस्त जीवन-प्रणाली प्रभावित होती है और सतत विकास के लिए चुनौतियाँ खड़ी करती है ।

शोधबिन्दव:- पर्यावरण, जलवायु, प्रदूषण

युगों से चला आ रहा भारतीय चिंतन और परंपरा प्रकृति से तादात्म्य और उसकी महिमा को हक दरकिनार नहीं कर इस वैज्ञानिक युग में प्रकृति की ही, जो चर्चा है- 'पर्यावरण' शब्द 'अनावरण' में 'परि' उपसर्ग-संश्लिष्ट से निर्मित है, जिसका शाब्दिक अर्थ चारों ओर से ढंकना, आच्छादन या घेरा है। डॉ. बद्रीनाथ कपूर इसकी वैज्ञानिक परिभाषा 'आस-पड़ोस' की परिस्थितियां और उसके प्रभाव से समीकृत करते हैं। 'परि' संस्कृत का उपसर्ग है, जिसका अर्थ 'अच्छी तरह' और 'आच्छादन' भी है। आवरण का शाब्दिक अर्थ ढंकना, छिपना, घेरना, चहारदीवारी है। यद्यपि शाब्दिक अर्थ से इसका पूर्ण अभिप्राय प्रकट नहीं होता, तथापि इसका मूल अर्थ इसमें समाकृत है।

प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन्ध दोहन और इसके साथ ही आधुनिक उपभोगवादी सभ्यता के नाम पर अंधी दौड़ ने आज मानव को उस स्थान पर पहुँचा दिया है जहाँ पर संसार को जीत लेने के बाद भी ऐसा लगता है कि वह जीवन से हार गया है। सारी सुख – सुविधाओं और संसाधनों की उपलब्धता के बाद भी आज मनुष्य अकेला सा रह गया है। तकनीकी विकास के युग में मनुष्य प्रकृति का विजेता बनकर सभ्यता के शिखर पर खड़ होने का दावा करता है परन्तु मौलिक विकास के साथ ही प्रदूषण से मनुष्य ही नहीं वरन पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और जानवर भी प्रभावित होते हैं। मोटरकार तथा अन्य डीजल-पेट्रोल के वाहनों के धुंओं में कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो सूर्य के प्रभाव से जहरीले तत्वों में परिवर्तित हो जाते हैं। यह जहरीले तत्व हमारी फसल, पेड़-पौधों आदि पर अपना घातक प्रभाव छोड़ते हैं। कच्ची धातु के कारखानों से इतनी मात्रा में सिल्वर ड्राई आक्सीजन उत्पन्न होती है जो हजारों एकड़ जंगलों को नष्ट कर डालती है।

पर्यावरण का निर्माण हमारे चारों ओर विद्यमान जैविक एवं अजैविक पदार्थों से होता है। इन पदार्थों में पारस्परिक संबंध एवं संतुलन होता है जिसके परिणामस्वरुप एक स्वच्छ, संतुलित एवं सुसंगठित पर्यावरण का निर्माण होता है । पर्यावरणीय घटकों के आपसी सामंजस्य के परिणामस्वरुप पृथ्वी पर जीवन की आधारशिला मजबूत हुई है। पृथ्वी के समस्त जीवधारी पौधों पर आश्रित हैं। पौधों में ही एकमात्र ऐसा गुण पाया जाता है कि वह सौर ऊर्जा उत्पन्न करके प्रकाश संश्लेषण की रासायनिक प्रक्रिया

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

द्वारा अपना भोजन बनाते हैं एवं प्राणदायक वायु द्वारा निर्मित भोजन एवं वायु से जीवधारी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

वेदकाल में ही ऋषि-मुनियों ने इसमें संतुलन बनाए रखने का हर संभव प्रयास किया है तथा अंतरिक्ष से पृथ्वी –पर्यंत शांति बनाए रखने की भी कामना की थी। ऋषि –मुनियों की यह मंगलकामना पर्यावरण-संतुलन का श्रेष्ठ उदाहरण है। क्योंकि इसके बिना जीवन में सुख-शांति असंभव है। अंत में तीन बार शांति का प्रयोग क्रमशः दैहिक, दैविक व भौतिक संताप के निराकरण के लिए ही निर्दिष्ट है। पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन संपूर्ण शक्तियों-परिस्थितियों का योग है, जो मानव को परावृत करती हैं तथा उसके क्रियाकलापों को अनुशासित करती हैं। थल, जल और वायु में ही जीवनमंडल है, जो जीवन की अनुक्रियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक और जीवीय परिस्थितियों का योग है। ऋषि-मुनियों ने जिस पर्यावरण संतुलन को बनाए रखा था, वह हमारी दिनचर्या थी। इसी दृष्टि से सौ वर्ष तक सार्थक जीवन व्यतीत करने की आधारशिला रखी गई थी।

प्रकृति ने हमें स्वच्छ वायु, धरा व स्वच्छ आकाश से नवाजा है। अत: प्रकृति के इन अनमोल तोहफों को संजो कर रखना हर व्यक्ति का कर्तव्य ही नही अपितु धर्म है भारतीय संविधान में इसी सोच से नागरिकों की कर्तव्य सूची में पर्यावरण की रक्षा करना हर व्यक्ति का दायित्व बनाया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51-A (g) में प्रत्येक नागरिक का दायित्व निर्धारित किया गया है कि वह प्राकृतिक पर्यावरण खास कर जंगल, झीलें, नदियाँ और वन्य प्राणी की सुरक्षा व सुधार के आलवा सभी जीवों के प्रति करुणावान रहे।

वर्तमान सरकार ने पर्यावरण की इस बिगड़ती हुई दशा को मध्यनजर रखते हुए 'स्वच्छ भारत' अभियान की सोच उजागर की। इसी संदर्भ में गंगा सफाई अभियान भी सुर्खियाँ बना कितनी विडम्बना है कि जिस गंगा माँ को हम अपने पापों की हरणी मानते है उसी गंगा नदी में हम हर किस्म का कचरा प्रवाहित करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया के 20 सबसे ज्यादा प्रदूषण वाले शहरों में से 13 शहर भारतवर्ष में स्थित है। भारत की राजधानी दिल्ली शहर जहाँ पौने दो करोड़ दिल धड़कते हैं वहां की वायु विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से 14 गुना अधिक प्रदूषित है भारत की राजधानी दिल्ली में रहने वाले 50% बच्चे श्वांस से सम्बंधित बीमारियों से ग्रस्त है। दिल्ली के अलावा अन्य अत्यधिक शहरों में कलकत्ता, मुंबई व चेन्नई का नाम शामिल है | भारत में साल 2010 के दौरान 62 लाख व साल 2014 के दौरान 70 लाख लोग वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों के कारण समय से पहले जान गवां बैठे। स्पष्ट है कि वायु प्रदूषण जन स्वास्थ्य के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है जिस के लिए विश्व भर में चिंता जताई जा रही है।

पर्यावरण किसी व्यक्ति विशेष की सम्पति नही बल्कि यह पूरी मानवजाति की धरोहर है जिसकी सुरक्षा करना हर व्यक्ति का दायित्व बनता है। यदि वायु प्रदूषण रहित वातावरण तैयार करना है तो बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ वाहनों की बढ़ती संख्या पर विराम लगाना होगा तथा विकास के नाम हो रहे प्रकृति के विनाश को रोकना होगा। यदि समय रहते हमने उस ओर कारगर कदम नही उठाये तो वे दिन दूर नही जब प्रकृति सम्पूर्ण मानवजाति को अपने आगोश में ले लेगी।

वैज्ञानिक युग की समृद्धि ने हमें सुविधाभोगी और भौतिकवादी बना दिया है। परिणामतः एक ओर यदि प्रकृति के प्रभाव व पर्यंक से हम दूर होते गए तो दूसरी ओर कंक्रीट का जंगल उगाते चले गए। स्वार्थ के लिए वनों को काटना, जनसंख्या-विस्फोट का आह्वान करना हमारा जीवन-क्रम हो गया। ठंड में गुनगुने पानी से नहाना, गर्मी में वातानुकूलित कमरे में रहना और हल्की वर्षा में भी रेनकोट पहनकर निकलना हमें प्रकृति से दूर ले जाता है। ऋतु-परिवर्तन के अनुरूप हमारे शरीर पर भी प्रकृति का प्रभाव पड़ना जरूरी है, अन्यथा प्रतिरोधक शक्तियों का क्षरण होता है। इसीलिए हमारा शरीर भीग जाने या हल्की ठंड लग

जाने पर झींक, खांसी, बुखार को गले लगाता है तथा ग्रीष्म में 'सिरदर्द' और 'सनस्ट्रोक' की शिकायत प्रायः हो जाती है। हमारी काया वर्षा में भीगते, ठंड में ठंडक और गर्मी में ताप महसूस कर प्रतिरोधी शक्ति प्राप्त कर रोग से लड़ने लायक बनाती है। लेकिन हम प्रकृति से निरंतर दूर होकर नानाविध बीमारियों को साथी बनाते हैं। जंगल कटने से वर्षा कम होती है, जिसके कारण क्रमशः गर्मी बढ़ती है, फसल कम होती है। फसल के अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक खाद का उपयोग किया जाता है, जो जल और जमीन को बर्बाद कर देती है। फसल में नानाविध विकृतियां आ जाती हैं तथा धीरे-धीरे धरती अनुर्वर होने लगती है।

हमारा देश कृषि-प्रधान है, लेकिन कुटीर उद्योग के सहयोग बतौर इसे आत्मनिर्भर बनाना है। वृहत्काय उद्योगों के आगमन से ध्वनि, वायु और जल-प्रदूषण का संकट गहराया है। अधिक जनसंख्या वाले हमारे देश में उंगलियों की कला वाले लघु उद्योगों की जरूरत है, न कि हाथ काटने वाले वृहद् उद्योगों की। यदि एक ओर अर्थव्यवस्था चरमरा रही है तो दूसरी ओर पर्यावरण का संतुलन भी नष्ट हो रहा है। भोपाल के अमेरिकि कार्बाइड कारखाने की गैस-त्रासदी मानवीय विनाश का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इससे वायुमंडल तो दूषित हो ही रहा है, हमें सांस लेने में परेशानी होती है, परिणामतः क्षय रोग, फेफड़े और हृदय की गंभीर बीमारियों को यह जन्म देता है। जल तो पूरी तरह प्रदूषित है और पतित-पावनी गंगा भी मैली हो गई है। इस तरह जिस स्थल में हम रहते हैं, वह स्वस्थ और संतुलित नहीं है, क्योंकि प्रकृति से हम कट रहे हैं। थल, जल और वायु के प्रदूषण से जीवन संकट से घिर रहा है और उसका कारण हम स्वयं हैं। हमने ही प्रकृति को हटाकर कृत्रिमता को आरोपित किया है, पर्यावरण की उपेक्षा कर प्रदूषण से नाता जोड़ा है।

प्रकृति तो सब कुछ देती है, लेकिन मनुष्य को धैर्य कहां है ? उसे प्रतिदिन सोने का अंडा देने वाली मुर्गी नहीं चाहिए ? वह दोहन करके सभी कुछ अभी-का-अभी प्राप्त करना चाहता है। प्रकृति तो स्वतः समय पर रत्नों की खान को मानव को भेंट कर देती है, लेकिन हम तत्काल सब कुछ प्राप्त कर लेना चाहते हैं। भूकंप का प्रकोप हमें झेलना पड़ता है। आज न जल पीने के लायक रह गया है और न वायु सांस लेने के लायक। कब तक हम अपने को संकट और समस्या के मुंह में धकेलते रहेंगे? प्रकृति के संतुलन को बनाए रखना प्रकृति के पर्यंक में बने रहना और ऋतु-चक्र के नियमों मे उंगली न कर उसके अस्तित्व को बचाए रखकर ही मद-सुगंध-समीकरण तो प्राप्त होगा ही, स्वच्छ भूमि व जल भी उपलब्ध होगा। इसके लिए रासायनिक खाद के उपयोग को रोकना, ध्वनि, वायु और जल को दूषित करने वाले संयंत्रों और उद्योगों को रोकना होगा। यह विडंबना ही है कि हमारे देश में ऐसे विदेशी संयंत्र लगाए जाने की परंपरा है, जिसका उपयोग वैज्ञानिक अपने देश में नहीं करते। आज प्रदूषण रहित यंत्रों की प्रजनन की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान गया है। इस दिशा में जन-जागृति आवश्यक है। इसके साथ ही फसल में हम उत्पादकता की जगह गुणवत्ता देखें और जनसंख्या-शिक्षा का प्रसार कर प्रकारांतर में पर्यावरण-संरक्षण की दिशा में पहल करें। इससे ही हमारा और जीवन का विकास संभव होगा। हमारे चिंतन के साथ पर्यावरण संरक्षण तमाम स्तरों पर आवश्यक है। साहित्य में समाज से ही सब कुछ आता है, ऐसी स्थिति में साहित्यकार को जागरूक प्रहरी की भांति पर्यावरण-रक्षा हेतु उद्यत होकर कार्य करना होगा, ताकि समाज का संपूर्ण विकास और भविष्य मंगलकारी बन सके।

पर्यावरण-प्रदूषण मानव और जीवधारियों के लिए भंयकर चुनौती है। मनुष्य अपने बुद्धि-चातुर्य और दूरदृष्टि से प्रगति के रथ को गतिशील बनाये हुए हैं॥ सभी वैज्ञानिक इस विषम समस्या का हल खोजने के लिए विकल है। पूर्ण आशा है कि भविष्य में पर्यावरण-प्रदूषण के सभी कारणों का स्थायी समाधान हो सकेगा और उन पर प्रभावी नियंत्रण प्राप्त किया जा सकेगा स्मरण

रखना चाहिए कि पर्यावरण-संरक्षण से ही अपना और पृथ्वी के सभी जीव-जंतुओं का भविष्य सुरक्षित है और सभी को सदा पर्यावरण-संरक्षण के प्रति सजग रहना चाहिए।

औद्यौगिक क्रांति के बाद से शुरू हुई मानव गतिविधियों के प्रभाव से पृथ्वी पर उल्लेखनीय वृद्धि व परिवर्तन हुए है, जिसने पर्यावरण को विचलन की ओर अग्रसर किया है ॥ अभी और नाटकीय परिवर्तन हो सकते हैं यदि हमलोग सुधारात्मक कदम नहीं उठाते हैं तो। मानव और पर्यावरण व्यवस्था के संतुलन और आर्थिक विकास का पर्यावरण संरक्षण के साथ सामंजस्य करने की दिशा में पहल करना होगी। जलवायु परिवर्तन से पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होती है जिसके कारण जीवन- प्रणाली पर प्रभाव पड़ता है। अगर हम इस सिद्धांत को अपनाएं कि जिन देशों ने कार्बन डाइऑक्साइड का अधिक उत्सर्जन किया है तो हम पाते हैं कि अन्य देशों के मुकाबले भारत की हिस्सेदारी बहुत कम रही है और विकसित देशों से कोई मुआवज़ा लिए वगैर अपने उत्सर्जन को विनियमित करने की भारत की कोई भी प्रतिबद्धता उदारता ही मानी जाएगी। भारत इस समस्या के समाधान में अपना योगदान करने से पीछे नहीं हटेगा । भारत को जलवायु परिवर्तन संबंधी चुनौतियों का सामना करने हेतू उदार प्रतिबद्धताओं के साथ आगे बढ़ता रहना चाहिये। इस तरह से भारत विश्व-पटल पर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। विकास के साथ-साथ पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन अति विपरीत प्रभाव पड़े तो उस विकास का कोई मूल्य नहीं होता । यदि विकास आवश्यक है तो पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डालने वाले कारकों को भी दूर करना आवश्यक है । पर्यावरणीय मुद्दों को आर्थिक विकास नीति के साथ इसलिए जोड़ा गया है ताकि दोनों का विकास हो और पर्यावरण संतुलित रहे। पश्चिम की औद्योगिक एवं आर्थिक विकास की सोचने की प्रकृति ने जो निर्मम दोहन किया है, पर्यावरण संकट की वर्तमान इसी का गंभीर परिणाम है। ऊर्जा के लिए कोयला, लकड़ी, पानी, पेट्रोल-डीजल का अन्धाधुन्ध उपयोग होना भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। आनेवाली पीढ़ी को शायद हमें ये चीजें संग्रहालय में दिखाना होंगी।

पर्यावरण संतुलन के भौतिकतावादि प्रयास तब तक निष्प्रभावी होंगे, जब तक प्रकृति के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव जागृत नहीं होगा। मनुष्य जब तक अपने व्यक्तिगत ऋण के शब्दों में दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन नहीं करता तब तक वर्तमान पर्यावरण संकट के समाधान के विषय में सोचना सिर्फ और सिर्फ एक कोरी कल्पना मात्र है। पर्यावरण वर्तमान पीढ़ी के हाथों में है चाहे हम किसी भी स्तर पर हों। इसकी सुरक्षा और संरक्षण को किसी भी एक सरकारी विभाग पर नहीं छोड़ा जा सकता। इसमें हर व्यक्ति को अपना दायित्व समझना होगा ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ीयों को एक सुन्दर स्वरुप, स्वच्छ पर्यावरण सौंप सकें।